प्राकृत ग्रन्थमाला - 17

मागधी प्राकृत की विभाषाएँ

प्रधान-सम्पादक
प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री
(कुलपति)

लेखक एवं सम्पादक
डॉ. सुदर्शन मिश्र
(एम.ए, पीएच.डी. डी.लिट्.)

पालि-प्राकृत योजना
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
जनकपुरी, नई दिल्ली

PRAKRIT TEXT SERIES -17

DIALECTS OF MAGADHI PRAKRIT

CHIEF EDITOR,

PROF. PARAMESHWARA NARAYANA SHASTRY

Vice Chancellor

AUTHOR & EDITOR

DR. SUDARSHAN MISHRA

M.A, PH-D., D.LITT.

Pali -Prakrit Scheme

Rashtriya Sanskrit Sansthan

(Deemed University)

Janakpuri-New-Delhi

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
प्रस्तावना	
1. भाषा और विभाषा	1
नाट्यशास्त्र में भाषा और विभाषा	3
2. मागधी प्राकृत की विभाषाएँ	4
शाकारी	
1. शाकारी के प्राचीनतम उल्लेख	5
2. शाकारी के लक्षण	5
3. शाकारी विभाषा प्रयुक्त संस्कृत-नाटक	**6-11**
1. चारुदत्तम्	6
2. मृच्छकटिकम्	8
4. शकार का चरित्र-चित्रण	11
5. चारुदत्तम् में शाकारी का वैशिष्ट्य	**17-24**
मागधी प्राकृत की जातीय विभाषाएँ	**23-30**
1. आभीरी: मागधी की एक विभाषा	23
2. आभीरी का जातीय आधार	23
3. व्याकरण-ग्रन्थों में आभीरी	23
4. आभीरी के व्याकरणिक लक्षण	23
5. आभीरी के अन्य लक्षण	24
आभीरी प्रयुक्त ग्रन्थ	**24-27**
1. बालचरितम्	24
2. पञ्चरात्रम्	26
आभीरी-भाषी-पात्र	**27-30**
1. नन्दगोप	27
2. वृद्धगोपालक	28
3. दामक	29
4. गोपालक	29
5. गोमित्रक	29
6. गोपकन्याएँ	29
7. गोप बालक-बालिकाएँ	30

शकारः-गह्ण भावे! गह्ण।

[गृहाण भाव! गृहाण।]

पकड़ो महानुभाव! पकड़ो।

विटः- एषा हि वयसो दर्पात् कुलपुत्रावमानिनी।
केशेषु कुसुमन्यासैः सेवितव्येषु धर्षिता॥8॥

मैंने पुष्पों की विशेष रचना के द्वारा इस्तेमाल करने योग्य केशों के द्वारा (इसे) बलात् पकड़ लिया है, (क्योंकि) यह तरुणावस्था के अभिमान से हमारे जैसे कुलपुत्रों को अपमानित करने वाली हो गई है।

शकारः-भावे। किं गहिदा।

[भाव! किं गृहीता।]

महानुभाव, क्या (वह) पकड़ ली गयी?

विटः- अथ किम्। एषा गन्धानुसारेण गृहीता।

और क्या? यह गन्धों के आधार पर पकड़ी गयी है।

शकारः-दाशीएपुत्तीए शीशं दाव छिन्दिअ पच्चा माळइश्शं।

[दास्याः पुत्र्याः शीर्षं तावच्छित्त्वा पश्चान्मारयिष्यामि।]

पहले इस दासीपुत्री का सिर काटूँगा, पश्चात् मारूँगा।

विटः- गृह्यतां तावत्।

तब पकड़ो।

शकारः-(चेटीं गृहीत्वा)

एशा हि वाशू शिळशि ग्गहीदा केशेशु वालेशु शिळोळुहेशु।
कूजाहि कन्दाहि ळवाहि वात्तं महेश्शळं शङ्कळमिश्शळं वा॥9॥

(चेटीं बलादाकर्षति।)

[एषा हि वासूः शिरसि गृहीता केशेषु वालेषु शिरोरुहेषु।
कूज क्रन्द लप वार्तं महेश्वरं शङ्करमीश्वरं वा॥]

(चेटी को पकड़ कर) मैंने इस वसन्तसेना को सिर से, केशों तथा शिर के बालों द्वारा पकड़ा लिया है। चिलाओ, विलाप करो अथवा कातरभाव से (तुम) शङ्कर या ईश्वर को बुलाओ।

चेटी- किं अय्यमिस्सेहि ववसिदं।

[किमार्यमिश्रैर्व्यवसितम्।

आर्य लोगों के द्वारा यह क्या किया गया?

शकारः-भावे! जाणामि शळयोगेण ण होइ[3] वशञ्चशेणिआ।

[भाव! जानामि स्वरयोगेन न भवति वसन्तसेना।]

महानुभाव! स्वर-योग (वाणी) से मैं जान रहा हूँ कि यह वसन्तसेना नहीं है।

.....

पालि एवं प्राकृत योजना के अन्तर्गत प्रकाशित प्राकृत ग्रन्थों की सूची

1. प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ (लेख संग्रह)
2. प्राकृत भाषा और व्याकरण के विविध आयाम (लेख संग्रह)
3. आख्यानमणिकोशः (हिन्दी अनुवाद)
4. नाट्यशास्त्र में प्राकृत-सन्दर्भ (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
5. किरियासारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
6. णाणसारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
7. कसायपाहुडसुत्तं (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
8. रयणसारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
9. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में प्रतिपादित दार्शनिक मीमांसा
10. भारतीय दर्शन और साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान (लेख संग्रह)
11. UNIVERSAL VALUES OF PRAKRIT TEXTS (लेख संग्रह)
12. भगवदी आराहणा (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
13. गणिविज्जा-सुत्तं (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
14. पउमचरियं - प्रथम भाग (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
15. गाहारयणकोसो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
16. दंसणकहरयणकरंडु, प्रथम भाग (हिन्दी अनुवाद)
17. मागधी प्राकृत के प्राचीनतम अभिलेख एवं मागधी प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी कोश
18. मध्यकालीन मागधी प्राकृत व्याकरण एवं सन्दर्भ

योऽनूचानः स नो महान्।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

पालि-प्राकृत योजना
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
56-57 सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058
ईमेल - rskspp2009@gmail.com
फोन - 011-28520979, फैक्स- 011-28520976

978-93-85791-36-9